Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन

Dr. Ajay Shankar Yadav*

Assistant Professor (History) Virangana Maharani Laxmi Bai Government Girls Degree College, Jhansi, Uttar Pradesh

सार – ***अगाध ज्ञान के भण्डार, घोर अध्यवसायी, अदभुत प्रतिभा, सराहनीय निष्ठा, न्यायशीलता तथा स्पष्टवादिता के धनी डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक, संविधान शिल्पी और राजनीतिज्ञ थे। अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिए समर्पित था। अस्पृश्यों तथा दलितो के वे मसीहा थे। उन्होने अपने विरूद्व होने वाले अत्याचारों, शोषण अन्याय तथा अपमान से संघर्ष करने के लिये शिक्षा रूपी शक्ति दी। उनके अनुसार सामाजिक प्रताड़ना राज्य द्वारा दिये जाने वाले दण्ड में भी कही अधिक दुःखदायी हैं। उन्होने न सिर्फ समाज में दलितों और अछूतों की स्थिति में सुधार के लिये कार्य किया अपितु श्रमिकों, किसानों, महिलाओं तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकारों और उनकी शिक्षा के लिये कार्य किया। अम्बेडकर जी द्वारा किये गये कार्यो के कारण ही उन्हे भारत का अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर कहा गया है तथा उन्हें बोधिसत्व की उपाधि से भी विभूषित किया गया।***

----------X----------

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचार

डॉ. अम्बेडकर भारत माता के ऐसे प्रभावशाली मेघावी एवं यशस्वी सपूत रहे है जिनकी अप्रतिम सेवाओं के लिये चिरकाल तक यह देश ऋणी रहेगा। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के अनुसार अछूत परिवार में जन्म लेकर भी अध्ययन के लिये आवश्यक सुविधाओं से वंचित रहते हुये तथा बचपन से ही अपमान, तिरस्कार और घृणा के घूट पीते हुये एम.ए., पीएच.डी., एम.एस.सी., डी.एस.सी. डी.लिट जैसी शिक्षा की उच्चतम उपाधियाँ प्राप्त करना उनके अदम्य साहस, लगन निष्ठा, धैर्य और शिक्षा के प्रति गहनतम लगाव महत्वपूर्ण उदाहरण है। अपने जीवन में उन्होने जा भी उपलब्धि प्राप्त की थी वह शिक्षा के बल पर ही प्राप्त की थी। इसलिये उन्होने हर प्रकार के विकास के लिये शिक्षा को एक अमोध अस्त्र बताया तथा शिक्षा को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना है।

डॉ0 अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा ही एकता, बंधुता और देशप्रेम के विवेके को जन्म देती है। सभ्यता और संस्कृति का भवन शिक्षा के स्तम्भ पर ही बनता है। शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करती है तथा शिक्षा के अभाव में मानव पशुतुल्य होता है। बाबा साहब ने कहा है कि "शिक्षा वह शेरनी का दूध हैं जो पियेगा वही दहाडेगा" और उन्होने शिक्षा को सामाजिक समरसता व व्यक्ति में सात्विक गुणों का विकास करने वाली बताया है।

बाबा साहब प्रचलित शिक्षा तथा शिक्षण पद्वति को बदलना चाहते थे। उनका मानना था कि समरसता निर्माण करने वाली व लोकतान्त्रिक मूल्यों की भावना का विकास करने वाली शिक्षा व पाठ्यक्रम को ही पढ़ाया जाना चाहिये। उनका ये दृढमत था कि समाज में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये जिसकी समय के अनुकूल आवश्यकता है। वे मानते थे कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होना चाहिये, जिससे बालक में रूचि से पढ़ने का स्वभाव का निर्माण हो। उनका मानना था कि विघालय समाज का एक लघुरूप होता है तथा उन्होने अपने छात्र जीवन से ही यह महसूस किया था कि विघालय में रहकर सामूहिक अवधारणाओं को समाप्त किया जा सकता है।

डॉ. अम्बेडकर जी भारत के शिल्पकार के साथ-साथ एक महान शिक्षक भी थे। उनका मानना था कि शिक्षा से ही ज्ञान का ताला खुलता है। वे शिक्षक को राष्ट्र निर्माता मानते थे। शिक्षक के सम्बन्ध में उन्होने कहा है कि शिक्षक ज्ञान

www.ignited.in

पिपासु, अनुसंधान करने वाला व आत्म विश्वासी होना चाहिये। उनका मानना था कि शिक्षा क बिना कोई भी समाज आगे नही बढ सकता है। अंध विश्वासों से मुक्ति, अज्ञानता, अन्याय और शोषण के विरूद्व ललकारने की ताकत भी शिक्षा से ही संभव है। भारत सैकड़ों वर्षो तक विदेशी सत्ता, शासकों के पराधीन रहा, जिससे भारत में पतन और अवनति का दौर अनंतकाल तक चलता रहा और बाबा साहब यह मानते थे कि देश की इस पराधीनता का कारण शिक्षा भी है और मुख्यतः महिला शिक्षा का न होना। इसलिये उन्होने स्त्री शिक्षा पर भी बहुत बल दिया और विशेषकर दलित महिलाओं की शिक्षा पर अधिक बल दिया। उनका स्पष्ट मत था कि यदि दलित समाज की महिलायें शिक्षित होगी तो वे अपनी संतानों को भी शिक्षित व संस्कारवान बना सकती है।

अम्बेडकर जी ने अनुसूचित वर्ग की शिक्षा की भी वकालत की। उनका मानना था कि अनुसूचित वर्ग के माथे पर लगे अज्ञानता के टीके और समाज में फैली उनकी दुर्भावना से निकलने का एक ही मार्ग था कि वे पढ लिखकर अपनी मुक्ति का रास्ता प्रशस्त करें। इसलिये वह अनुसूचित समाज के उद्वार में शिक्षा को एक बड़ा स्त्रोत मानते थे। बाबा साहब के शिक्षा सम्बन्धी विचार देश, काल, परिस्थिति के प्रभाव से परे है। उनके विचार न केवल तत्कालीन परिस्थितियों में प्रासंगिक थे अपितु हर काल समय अथवा आज भी उतने ही समीचीन है। उनके द्वारा दिया गया मन्त्र "शिक्षित बनों, संघर्ष करों, संगठित रहो" में ही उनके संघर्षपूर्ण जीवन का व उनके शैक्षिक विचारों का सारांश हैं बाबा साहब ने न केवल अनुसूचित समाज की शिक्षा पर बल दिया बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ सभी महिला व पुरूषों के समान शिक्षा की भी स्पष्ट बात की। उनका मानना था कि यदि स्वाभिमान शून्य समाज की अपने जीवन को पुनः चलायमान रखना है तो उसकों शिक्षित होना ही होगा।

डॉ. अम्बेडकर जी के सामाजिक विचार

अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिये समर्पित था। अस्पृश्यों व दलितों के वे मसीहा थे। उन्होने सदियों से पद-दलित वर्ग को सम्मानपूर्वक जीने के लिये एक सुस्पष्ट मार्ग दिया। उनके अनुसार सामाजिक प्रताड़ना राज्यों द्वारा दिये जाने वाले दण्ड से भी कहीं अधिक दुःखदायी हैं उन्होने प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का विशद अध्ययन कर यह बताया कि भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा तथा अस्पृश्यता का प्रचलन समाज में कालान्तर में आई विकृतियों के कारण उत्पन्न हुयी है, न कि यह यहाँ के समाज में प्रारम्भ से ही विद्यमान थी। उन्होने दलित वर्ग पर होने वाले अन्याय का विरोध ही नहीं किया अपितु उनमें आत्म-गौरव, स्वावलम्बन, आत्मविश्वास, आत्मसुधार तथा आत्मविश्लेषण करने का शक्ति प्रदान की।

डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय आर्यों के सामाजिक संगठन का आधार रही चातुर्वर्ण व्यवस्था का विरोध किया तथा उसकी कटु आलोचना की। उनके अनुसार यह विभाजन श्रम के विभाजन पर आधारित ने होकर श्रमिकों के विभाजन पर आधारित था। उनका मत था कि उन्नत तथा कमजोर वर्गो में जितना संघर्ष भारत में है वैसा विश्व के किसी अन्य देश में नही है। डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था के बारे में यह स्पष्ट किया कि यह भारतीय समाज की एक बहुत बड़ी विकृति है जो दुःखभाव समाज के लिये बहुत ही घातक है। उनके अनुसार जाति व्यवस्था ने केवल हिन्दू समाज को ही दुष्प्रभावी नही किया अपितु भारत के राजनीतिक, आर्थिक तथा नैतिक जीवन में भी जहर घोल दिया। उन्होने समाज में प्रचलित अस्पृश्यता को अन्यायपूर्वक मानते हुये उसका प्रबल विरोध किया। उनका दृष्टिकोण था कि यदि हिन्दू समाज का उत्थान करना है तो अस्पृश्यता का जड़ से निराकरण आवश्यक है। उन्होने अस्पृश्यता निवारण के लिये सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक नैतिक व शैक्षणिक आदि स्तरों पर रचनात्मक कार्यक्रम तथा संगठित अभियान का आग्रह किया। उनका मानना था कि हिन्दू समाज मे स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय पर आधारित व्यवस्था स्थापित करने के लिये कठोर नियमों में संशोधन आवश्यक है। वह जातीय बंधन को समाप्त करने के समर्थक थे। उन्होने स्वयं अन्तर्जातीय विवाहों तथा सहभोजों को प्रोत्साहित किया। वे दलितों में शिक्षा के प्रसार को महत्वपूर्ण मानते थे, वह उन्हे केवल औपचारिक शिक्षा देने की नहीं बल्कि अनौपचारिक शिक्षा की भी बात करते थे।

अम्बेडकर जी का मानना था कि दलित वर्ग को अपने हितों की रक्षा के लिये व विधायी कार्यो को अपने पक्ष में प्रभावित करने के लिये राजनीति में पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये। इसलिये उनका मानना था कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विधानमण्डलों में दलितों की भागीदारी हेतु पर्याप्त प्रतिनिधित्व के लिये कानून बनाया जाना चाहिये। वह दलितों को सरकारी सेवाओं में पर्याप्त प्रतिनिधित्व तथा आरक्षण की भी बात करते थे। उन्होने भारतीय समाज में विद्यमान स्त्रियों की हीन दशा की कटु आलोचना की। उन्होने हमेशा स्त्री-पुरूष समानता का व्यापक समर्थन किया। यही कारण है कि उन्होने स्वतंत्र भारत के प्रथम विधिमंत्री रहते हुये हिन्दू कोड बिल संसद में प्रस्तुत करते समय हिन्दु स्त्रियों के लिये न्याय सम्मत व्यवस्था बनाने के लिये विधेयक में व्यापक प्रावधान रखे।

www.ignited.in

डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक दर्शन में अस्पृश्यों, दलितों तथा शोषित वर्ग के उत्थान के लिये व्यापक कार्य झलकते है। वे उनके उत्थान के माध्यम से एक ऐसा आदर्श समाज स्थापित करना चाहते थे। जिसमें स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व के तत्व समाज के आधारभूत सिद्वांत हो।

अध्ययन का महत्व

दलितों के मसीहा कहे जाने वाले डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के सामाजिक और शैक्षिक विचारों के अध्ययन के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा ला सकता हैः-

- अम्बेडकर जी ने शिक्षा को समाज के विकास का सबसे बड़ा हथियार बताया है। उनके अनुसार बिना शिक्षा के मनुष्य पशु समान होता है।
- अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचारों के कारण ही उन्हे अमेरिका द्वारा ज्ञान का प्रतीक (Symbol of Knowledge) की उपाधि से विभूषित किया गया है।
- भारतीय समाज में अम्बेडकर जी के विचारों के द्वारा ही समानता के बीज पडे है।
- सामाजिक कार्यो में सर्वप्रमुख महिला शिक्षा और महिलाओं को समानता का अधिकार दिलाने का कार्य बाबा साहब द्वारा किया गया।
- वर्तमान समाज में दलित, श्रमिक, किसान व शोषित वर्ग यदि समानता के साथ प्रत्येक वर्ग के साथ रह रहा है, तो उसमें अम्बेडकर जी के विचारों और उनके द्वारा कृत्य कार्यो व प्रयासों का अतुलनीय योगदान है।

अध्ययन के उद्देश्य

भारतीय संविधान के जनक डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के सामाजिक और शैक्षिक विचारों के अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैः-

- अम्बेडकर जी द्वारा किये गये अविश्वसनीय कार्यो की जानकारी प्राप्त करना।
- विषम परिस्थितियों में भी दृढता के साथ अपने आत्म विश्वास को अडिग रखने की प्रेरणा लेना।
- अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचारों दृष्टिकोण को वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिक बनाने हेतु
- अम्बेडकर जी के जीवन से जुडे हर सामाजिक पहलू के बारे में जानना।
- अम्बेडकर जी की प्रतिष्ठा व गौरव को वर्तमान युवा पीढ़ी तक पहुँचाना।

अध्ययन की विधि

इस शोध में शोध की ऐतिहासिक अनुसंधान विधि तथा तथ्यमूलक विधि का प्रयोग किया जायेगा। जिसमें अम्बेडकर जी के जन्म स्थान पर जाकर उनसे सम्बन्धित साहित्यिक स्त्रातों, सामाजिक व व्यावहारिक के बारें में जानकारी एकत्रित की जायेगी और विभिन्न पुस्तकों, लेखों, अम्बेडकर जी की आत्मकथा, प्रतिवेदनों आदि के माध्यम से सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर तथ्यों को एकत्रित कर उसके आधार पर अपना शोध कार्य पूरा किया जायेगा।

संदर्भ सूची

1. धनंजय कीरः अम्बेडकर-जीवन और मिशन
2. डी. आर. निगमः- अम्बेडकर-जीवन दर्शन
3. पुखराज जैनः- भारतीय राजनीतिक चिंतन
4. बी. एल. ग्रोवर, यशपालः आधुनिक भारत का इतिहास
5. डॉ. बी.पी. वर्माः मोर्डन इण्डियन पालिटिकल थॉट
6. प्रो. दत्ता भगत: दलित साहित्य
7. डॉ. बी. आर. अम्बेडकरः हू वर दा शूद्रास
8. डॉ. बी. आर. अम्बेडकरः रीडल्स इन हिन्दुजम

Corresponding Author

Dr. Ajay Shankar Yadav*

Assistant Professor (History) Virangana Maharani Laxmi Bai Government Girls Degree College, Jhansi, Uttar Pradesh

www.ignited.in